"शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं है, न यह विचारों की संवर्द्धन स्थली है न ही नागरिकता की पाठशाला है। यह आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश की दीक्षा है, सत्य की खोज मे लगी मानव आत्मा का प्रशिक्षण है। इस प्रकार शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार है। सही और गलत के मध्य फैसला करने का माध्यम है।"[1]

सुमन वर्मा

प्राध्यापक

अरिहंत बी.एड़ कॉलेज, उदयपुर

डॉ. एस. राधाकृष्णन के कहे यह शब्द आज भी सार्थकता प्रदर्शित करते हैं। अतः विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट स्थान है, जहाँ जीवन के निश्चित गुण और कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं और जीवन की शिक्षा इस उद्देश्य से दी जाती है कि बालक का विकास वांछित दिशा में हो। यह समयबद्ध प्रक्रिया होती है, जिसमें शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों क्रियाशील रहते हैं।

प्रधानाध्यापक के व्यवहार तथा उसके नेतृत्व में ही वह क्षमता होती है कि वह विद्यालय को उच्च स्तर तक लेकर जाता है। उसका व्यवहार अध्यापकों व छात्रों के मध्य एक मैत्रीय सम्बन्ध स्थापित करता है तथा अपने नेतृत्व के आधार पर अध्यापकों व छात्रों को साथ लेकर विद्यालय के उद्देश्यों व लक्ष्यों की पूर्ति करता है।

प्रधानाध्यापक संस्था का प्रधान तथा उसकी प्रगति का प्रतीक होता है। प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार का प्रभाव विद्यालय के व्यवहार को प्रदर्शित करता है, वह संस्था का नेता ही नहीं बल्कि पथ प्रदर्शक व मार्गदर्शक भी होता है।

प्रधानाध्यापक द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों का प्रभाव विद्यालय के कार्यों पर पड़ता है तथा छात्रों को मार्गदर्शन प्राप्त होता है। छात्रों पर इस प्रकार पड़ने वाले प्रभाव से ही एक अच्छे समाज का निर्माण होता है। प्रधानाध्यापक के साथ ही अध्यापक भी एक ऐसा महत्त्वपूर्ण पद है।

वर्तमान तक शिक्षा में कई प्रकार के शोध हुए है तथा नित नए आयाम भी इसमें जुड़े है जिससे शिक्षा में गुणवत्ता के साथ–साथ शिक्षा में सुधार की संभावना बहुत बढ़ गई है। नवीन तकनीकों, विधियों व सहायक सामग्रियों के माध्यम से कार्यों को संपादित करना आसान व सरल हो गया है, लेकिन यह भी तभी संभव है जब प्रधानाध्यापक में वे सभी गुण विद्यमान हो जो उसे एक अच्छा नेतृत्व व्यवहार प्रदान करें तथा अध्यापकों में भी वे गुण होने चाहिए जो अच्छा शिक्षण कक्षाओं में दे सकें।

प्रधानाध्यापक अपने ज्ञान, मूल्यों, उद्देश्यों, व्यवहार, कौशल आदि गुणों के द्वारा विद्यालय का नेतृत्व करता है। अध्यापकों की समस्याओं व समन्वय स्थापित करना, विद्यालय सम्बन्धी समस्याओं के सम्बन्ध में निर्णय लेना, विभिन्न योजनाओं, कार्यो की क्रियान्विति करना, छात्रों के विभिन्न कार्यक्रमों का निरीक्षण व मूल्यांकन करना आदि

सभी कार्य प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार क्षमता के अन्तर्गत आते हैं, जो उसे नेतृत्व क्षमता में निपूर्ण बनाते है। प्रधानाध्यापक के नेतृत्व में ही विद्यालय संस्कृति व पर्यावरण का उत्थान होता है तथा विद्यालय का निम्न या उच्च परिणाम भी प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व अध्यापक की भूमिका पर निर्भर करता है। प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार के साथ ही विद्यालय की शिक्षा प्रणाली में अध्यापकों के निष्पादन, विद्यालय की सम्पूर्ण गतिविधियों के साथ अध्यापकों द्वारा किये जाने वाले कार्यों के परिणाम का घोतक होता है, क्योंकि अध्यापकों के निष्पादन में उनके द्वारा विद्यालय में किये जाने वाले सम्पूर्ण कार्य आते है। अध्यापक का कार्य केवल शिक्षा प्रदान करना ही नही, अपितु बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना भी है, जो उनके निष्पादन स्तर के द्वारा ही पता चलता हैं।

अतः अध्यापक विद्यार्थियों की आकांक्षाओं के अनुरूप उनका सर्वागीण विकास कर राष्ट्र एवं समाज के लिए उपयोग नागरिक बनाने की दृष्टि से अपनी विद्वता एवं सृजनात्मकता तथा अन्य गुणों का प्रयोग करता है व उचित शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करता हुआ विषय सामग्री को विद्यार्थियों के समक्ष रोचक एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। वह विद्यार्थियों के निकट रहकर उन्हें समझता है और उन्हें उचित निर्देशन प्रदान करता है। अध्यापक का विषय ज्ञान, कार्यकुशलता, शिक्षण तकनीकी, संसाधनों का उचित उपयोग, विभिन्न कार्यक्रम योजना, मूल्यांकन, समय प्रबंधन तथा अपने ज्ञान व कौशल का उपयोग, विद्यालय व छात्रों के विकास में करना, अध्यापक के निष्पादन को प्रस्तुत करता हैं और अध्यापक के निष्पादन से ही विद्यालय व शिक्षा में प्रगति सम्भव है क्योंकि विद्यालय व शिक्षण कार्यो का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व शिक्षकों पर होता है।

विगत कुछ वर्षो में विज्ञान व अन्य क्षेत्रों में प्रगति के कारण जो व्यवसायीकरण हुआ है, उसके साथ सरकारी क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ गयी है, सरकारी क्षेत्र में गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रधानाध्यापक का नेतृत्व व्यवहार व अध्यापकों के निष्पादन का प्रभाव इस क्षेत्र में दृष्टिगोचर होता है तथा वर्तमान स्थिति का ज्ञान अध्यापकों को होना चाहिए। समस्याओं व उनके समाधान खोजे जाने चाहिए। अतः शिक्षा के क्षेत्र में प्रधानाध्यापक व अध्यापक की भूमिका समाज में अतिमहत्वपूर्ण हो जाती है, क्योकि भावी पीढ़ी के विकास व सृजन का दायित्व विद्यालय को ही माना जाता है। विद्यालय के परीक्षा परिणाम में यदि सभी छात्र उत्तीर्ण हो जाते है तो इसे अच्छा माना जाता है लेकिन उत्तम नही कह सकते, क्योंकि जब विद्यालय के अधिकांश छात्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते है तभी वह उत्तम परिणाम प्राप्त करते है लेकिन अधिकांश छात्र अनुतीर्ण रहे या केवल पास हो तो स्थिति शोचनीय या संतोषजनक हो जाती है। इस परिणाम को प्राप्त करने के पीछे अध्यापकों का निष्पादन तथा प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार की अति महत्पूर्ण भूमिका होती है। अध्यापकों का शिक्षण कार्य न किया जाना, नवीन ज्ञान व तकनीकों का सृजन न होना तथा प्रधानाध्यापक द्वारा दायित्वों का निर्वाह, निरीक्षण, आपस में संवादों का आदान–प्रदान न होने के कारण विद्यालय का परीक्षा परिणाम निम्न ही रह जाता है।

इस प्रकार राजकीय विद्यालयों की वर्तमान, स्थिति पर दृष्टिपात करते है तथा सरकारी आँकड़े तथा शोध यह बताते है कि विद्यालय के परिणाम पर सीधा प्रभाव प्रधानाध्यापक के नेतृत्व व्यवहार तथा अध्यापकों के निष्पादन का पड़ता है।